Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2021 GISRRJ | Volume 4 | Issue 4 | ISSN : 2582-0095

गोंड कलाकार वेंकट रमन सिंह श्याम की कलायात्रा

डॉ. गोरे लाल
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान,
शिवरामपुर चित्रकुट,उत्तर प्रदेश, भारत।

Article Info
Volume 4 Issue 4
Page Number : 32-36

Publication Issue :
July-August-2021

Article History
Accepted : 02 July 2021
Published :18 July 2021

सारांश – वेंकट रमन सिंह श्याम ने अपनी संस्कृति से सम्बन्धित लगभग उन सभी पशु–पक्षियों और पौधों को बनाने का प्रयास किया है जिन्हें उन्होंने अपने गाँव के आसपास जंगलों में देखा होगा। इन्होंने एक स्याही (कांटे वाला जानवर) का चित्र ब्लैक एंड व्हाइट में बनाया है जिसके शरीर में काफी बड़े–बड़े कांटे निकले हुए दिखाई देते हैं। जानवरों के कई चित्रों में एक शरीर के साथ दो या तीन शिरों को दर्शाया है इसमें हिरण, नीलगाय, घोड़े, कुत्ता आदि के चित्र शामिल हैं। इनकी एक पेंटिंग में एक तरफ बाघ का मुँह और दूसरी और हाथी को दिखाया गया है यह पेंटिंग कलर और ब्लैक एंड व्हाइट दोनों में एक साथ बनाई गई है। कई जानवरों जैसे हिरण और गाय के सींग को इन्होंने पेड़ के रूप में चित्रित किया है।

मुख्य शब्द – गोंड कलाकार, वेंकट रमन सिंह श्याम, कलायात्रा, संस्कृति, प्रकृति, कलाकार।

वेंकट रमन सिंह श्याम का जन्म पूर्वी मध्यप्रदेश के सिझौरा गाँव में 28 अक्टूबर 1970 में हुआ था। यह गाँव पाटनगढ़ से 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। इनके पिता प्यारे लाल श्याम सिझौरा के एक स्कूल में चपरासी थे। यह गोंड परधान थे जो गोंडों के भाई कहे जाते हैं। वेंकट की प्रारम्भिक पढ़ाई इनके गाँव में ही हुई बचपन में इन्होंने अपनी मां को बाक्स से कुछ सामान निकालते देखा तो वह उसे देखने के लिए उनके पास पहुंचे तो उन्होंने देखा कि उस बॉक्स के सबसे निचली सतह पर कुछ कागज हैं, जिनमें चारकोल से कुछ चित्र बने हैं पूछे जाने पर माई (माता) ने बताया कि यह उनके मामा के द्वारा बनाए गए चित्र हैं। वेंकट सोचने लगे कि मैं भी इसी प्रकार के चित्र बना लूँगा उस समय इनकी उम्र महज सात वर्ष की थी। इस बाल मन ने चारकोल (कोयले) से घर की दीवारों और स्कूल की दीवारों आदि जगहों पर चित्र बनाने शुरू कर दिए इसके लिए इनको कई बार मार भी खानी पड़ी लेकिन उत्सुकता के कारण यह काम करते रहे। इससे जो निखार हुआ उसका वह कक्षा 8 तक इनको पता चलने लगा। गाँव के वीडियो पार्लर में इन्हें फिल्मों के पोस्टर लिखने का काम करने को दोस्तों ने सलाह दी और उन्हें भी लगा कि इससे

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

कुछ रुपए भी मिल जाएंगे अतः वेंकट इस काम के लिए राजी हो गए उस समय नील, चारकोल, गेरू जैसे रंगों से पोस्टर लिखे जाए जाते थे। कई बार ब्रश के रूप में बांस की पतली छड़ी को कुचल कर उसी का प्रयोग कर लिया करते थे। वेंकट की पढ़ाई लगातार चलती रही और कक्षा 12 में वह पहुँच गया। इस समय वह जीव विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए उनकी प्रयोगात्मक परीक्षा की फाइल और उनके उपयोग के अन्य चित्रों को बनाने में उनकी मदद करनी शुरू की इससे दोस्तों से उसे कुछ रुपए भी मिल जाते थे जो उसके जेब खर्च को होते थे। वेंकट जन्म से ही अपनी माता को ढ़िगना और नोहडोरा आदि करते हुए देखते थे। वे उस गोंड संस्कृति को बचपन से ही जिए थे। इस वजह से उनके भीतर इसकी प्राचीन परम्परा का सागर भी मौजूद था। यह बचपन में अपने घरों की दीवारों पर कुछ मिट्टी के चित्र या नोहडोरा बनाते थे इन्हें चीन्हा भी कहा जाता था। ऐसा उनका मानना था कि ये घरों को बुरी नजर से बचाते हैं।

1986 की बात है जब जनगढ़ सिंह श्याम को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा 'शिखर सम्मान' दिया गया तो उसे दिखाने के लिए वह वेंकट के पिता के पास गए। जनगढ़ ने वेंकट द्वारा बनाई गई कुछ पेंटिंग को देखा जो उसके घर की दीवारों पर लगी हुई थीं। जनगढ़ मे वेंकट से भोपाल चलने को कहा लेकिन उनकी पढ़ाई चल रही थी, इसलिए वेंकट ने मना कर दिया। आर्थिक समस्या होने के कारण उस समय वेंकट की पढ़ाई के लिए रुपए कम पड़ने लगे जिससे वे कुछ समय टेलर का काम भी करना शुरू कर दिए। फिर पिता के कहने पर वेंकट भोपाल गए वह शहर उस समय उनके लिए अद्भुत सा था। उन्होंने पहली बार वहाँ जाकर तीन पहिए वाली टैक्सी देखा, भोपाल के सागर जैसे (ताल) झील को देखकर वह चकित रह गए। दूसरे दिन जनगढ़ सिंह श्याम ने 8 X 8 के पेपर में पेंटिंग बनाने को कहा और कहा कि तुम बनाओ मैं शाम को देखूँगा। मैं दिन भर सोचता रहा कि क्या बनाऊं शाम हो गई जब जनगढ़ आए उस समय तक मैंने कुछ नहीं बनाया था उन्होंने पूछा क्या हुआ मैंने कहा सोच रहा हूँ मैंने जनगढ़ जी से गाँव के जवारे और माता जी की सवारी के बारे में बनाने को पूछा तो उन्होंने उत्साह पूर्वक सहमति दे दी। मैंने इसका चित्रण किया इस चित्र को देखकर जनगढ़ खुश हो गए फिर काफी समय तक उनके साथ मैं काम करता रहा जब जनगढ़ को पेरिस में '100 मैजिशियन ऑफ द अर्थ' के लिए प्रदर्शनी में जाना था तो मैंने उनके काम में भी काफी सहायता की।

वेंकट बताते हैं कि इसी दौरान कुछ समस्याएँ आई जिसकी वजह से मुझे भोपाल छोड़ना पड़ा और दिल्ली जाना पड़ा यहां पर मैंने कुछ समय के लिए एक पुलिस अधिकारी के यहां सहायक के रूप में कुक का काम किया। लेकिन मैंने पेंटिंग का काम नहीं छोड़ा मुझे उस समय पहली बार जो वेतन मिला, जो कि महज 225 रुपये था। उससे मैंने रंग, ब्रश, कागज खरीद लिए और मैंने दिल्ली में रहते हुए 37 पेंटिंग बनाई। जिनके विषय पुराने ही थे जो उनकी संस्कृति से जुड़े हुए थे। इन्होंने बताया इन पेंटिंग को जनगढ़

जी को बेचने के लिए दे दिया। वेंकट ने खराब स्वास्थ्य और वित्तीय समस्या के कारण दिल्ली छोड़ दिया फिर अपने घर वापस चले गए इसके बाद 1993 में इनकी शादी हो गयी। वेंकट सिंह श्याम गाँव में जो काम करते थे उसको कहाँ बेचे उससे किस तरह से पैसा कमाएँ यह उनके लिए समस्या थी। कुछ समय बाद वेंकटरमन पुनः भोपाल आ गए इसी समय उनकी मुलाकात जे. स्वामीनाथन से हुई और उनसे काफी कुछ सीखने को भी मिला। उनका काम निरंतर जारी रहा लेकिन पेंटिंगस को बेचने में दिक्कत हो रही थी इसलिए इन्होंने अपनी फील्ड में बदलाव किया और 1993 से 2001 तक इन्होंने कमर्शियल काम शुरू किया जिसमें साइन बोर्ड और बेलबोर्ड को पेंट करना प्रमुख रहा। इसी दौरान रंगो का अच्छा प्रयोग और ब्रशों का अच्छा प्रयोग वेंकट को सीखने को मिला इस काम से इन्होंने कुछ पैसे कमाए लेकिन उन्हें समझ में आया कि इसमें भविष्य नहीं है। इसलिए वह वापस अपने गाँव चले गए लेकिन कुछ सहसा बदलाव हुआ जिसके कारण फिर एक आस दिखी इसमें से कुछ परिवर्तन ऐसे थे जैसे मध्यप्रदेश सरकार के हस्तशिल्प विभाग ने कुछ मदद की और 'तारा बुक्स' पब्लिकेशन चेन्नई का भी सहयोग मिला।

सन् 2002 में मध्यप्रदेश सरकार द्वारा इन्हें स्टेट अवार्ड दिया गया फिर 2004 में राजीव शेट्टी के माध्यम से यह बार्सिलोना गए। ये बताते हैं कि यह मेरी पहली विदेश यात्रा थी जब मैं वहाँ गया तो मुझे बहुत कुछ देखने को मिला जिस प्रकार मैं भोपाल आकर चकित था उसी प्रकार वहाँ अंडर ग्राउंड मेट्रो को देखकर चकित था। इसी समय मैंने पिकासो का लाइव वीडियो देखा इनकी पेंटिंग देखी और अन्य कलाकारों को भी जानने का मौका मिला यहां से मुझे काफी कुछ सीखने को मिला, वापस आने पर मुझे 2004 में ही 'तारा डग्लस' द्वारा बनाई गई एक गोंड कथा पर एक एनिमेटेड फिल्म का संयोजक बनाया गया। इस फिल्म को 'इनवर्टिस फिल्म फेस्टिवल', स्कॉटलैण्ड में सबसे छोटी कहानी प्रतियोगिता ट्राफी भी जीती। इस फिल्म का नाम 'बेस्ट ऑफ द बेस्ट' था। अप्रैल 2009 में वेंकट ने भोपाल में इंदिरा गाँधी मानव संग्रहालय में एक एकल प्रदर्शनी की यह 2008 के 26/11 मुंबई आतंकी हमलों के गवाह के रूप में उनके अनुभव के आधार पर 16 चित्रों की एक श्रंखला थी। सन् 2013 में वेंकटरमन सिंह श्याम की कृतियों का प्रदर्शन 'सकाहना अंतर्राष्ट्रीय स्वदेशी कला', कनाडा की राष्ट्रीय गैलरी ओटावा में किया गया जिसे समकालीन स्वदेशी कला का सबसे बड़ा वैश्विक सर्वेक्षण 'सकाहन' कहा जाता है जिसका अर्थ प्रकाश होता है। इसमें 16 देशों के 80 से अधिक कलाकार शामिल हुए थे और इनके द्वारा बनाई गई कृतियों को छः महाद्वीपों में प्रदर्शित किया गया था। पर्यावरण पर दिल्ली में एक महीने तक इनकी कला कृतियों की प्रदर्शनी लगी रही।

वेंकट सिंह श्याम कहते हैं कि जिस प्रकार कला के लिए बी.एफ.ए और एम.एफ.ए. जैसे कोर्स होते हैं उसी प्रकार गोंड कला के लिए भी संस्थान होने चाहिए और इसको मान्यता मिलनी चाहिए जिससे इसका विकास हो सके।

प्रमुख कलाकृतियाँ एवं शैलीगत विशेषताएं

वेंकट रमन सिंह श्याम ने अपनी संस्कृति से सम्बन्धित लगभग उन सभी पशु–पक्षियों और पौधों को बनाने का प्रयास किया है जिन्हें उन्होंने अपने गाँव के आसपास जंगलों में देखा होगा। इन्होंने एक स्याही(कांटे वाला जानवर) का चित्र ब्लैक एंड व्हाइट में बनाया है जिसके शरीर में काफी बड़े–बड़े कांटे निकले हुए दिखाई देते हैं। जानवरों के कई चित्रों में एक शरीर के साथ दो या तीन शिरों को दर्शाया है इसमें हिरण, नीलगाय, घोड़े, कुत्ता आदि के चित्र शामिल हैं। इनकी एक पेंटिंग में एक तरफ बाघ का मुँह और दूसरी और हाथी को दिखाया गया है यह पेंटिंग कलर और ब्लैक एंड व्हाइट दोनों में एक साथ बनाई गई है। कई जानवरों जैसे हिरण और गाय के सींग को इन्होंने पेड़ के रूप में चित्रित किया है।

इन्होंने एक 'करमा' नाम की पेंटिंग बनाई थी जिसके बारे में ये बताते हैं कि करमा एक गीत, नृत्य है जो हमारे यहां प्रदर्शित किया जाता है करमा का अर्थ है कर्म जो मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत करता रहता है और यह पूरी पृथ्वी में चल रहा है सब कर्म करते हैं और जीवन जीते हैं करमा पेंटिंग में इन्होंने पृथ्वी के चारों तरफ नृत्य–रत मानव आकृतियों को बनाया है जिसके बारे में कहते हैं कि पूरी पृथ्वी में ऐसा ही उमंग भरा जीवन होना चाहिए।

शेर– मिथकीय कथानकों पर आधारित चित्र को बनाया गया है शेर का मुँह खुला हुआ है जो कि आक्रामक मुद्रा में दिख रहा है शेर को शक्ति का प्रतीक भी माना जाता है जनजाति परम्परा में सूर्य को प्रमुख देवता के रूप में पूजते हैं सूर्य सत्य और निरंतरता का प्रतीक है। शेर अपना शिकार सुबह और सांय के समय में ही करता है। सुबह और सांय के समय जंगल एक विशेष प्रकार की चिड़िया होती है जो बहुत तेजी से आवाज करती हैं इससे डरकर जंगली जीव जन्तु छिप जाते हैं। चित्र की रेखा लहरदार तथा छोटी–छोटी बिंदुओं की सहायता से पूर्ण किया गया है चित्र में रंग संयोजन तथा भाव भंगिमा अद्‌भुत है।

तकनीकी का अध्ययन

वेंकट सिंह श्याम दूसरी पीढ़ी के कलाकार माने जाते हैं। इन्होंने गोंड कलाकारों की भांति बहुत अधिक मिट्टी के रंगों में काम नहीं किया इन्होंने अपना काम कोयले से प्रारंभ किया इससे वे पेपर और दीवारों में अनगढ़ चित्र बनाकर कर सीखते थे। कुछ समय बाद उन्होंने वीडियो पार्लर में काम किया था जिसमें नील, गेरू आदि रंगों को बांस की ब्रश से प्रयोग किया था। काफी समय तक उन्होंने पेपर पर एक्रेलिक रंग से भी काम किया इसी के साथ–साथ यह ब्लैक एंड व्हाइट में काम करते रहे हैं और इसे यह काफी व्यापक भी मानते हैं। इन्होंने रंगों को कुछ लाइट ढंग से प्रयोग करने का प्रयास किया है। जहां हम अन्य कलाकारों के चित्रों में बिंदुओं का प्रयोग ज्यादा मात्रा में देखते हैं वहीं इनकी पेंटिंग में बिंदुओं की मात्रा अपेक्षाकृत कम दिखाई देती है इनके काम अधिकतर रियलिस्टिक माध्यम में हैं। आगे चलकर इन्होंने काम का एक नया तरीका निकाला जिसमें इन्होने ब्लैक एंड व्हाइट और रंग दोनो का प्रयोग कर पेंटिंग बनाया है अर्थात एक ही पेंटिंग का कुछ भाग ब्लैक एंड व्हाइट और कुछ भाग रंगो वाला होता है। आज वेंकट सिंह श्याम कागज, कैनवॉस, मिट्टी पेपर आदि माध्यमों में काम कर रहे हैं।

सन्दर्भ

साक्षात्कार